सही जवाबों की तलाश

मैं अपनी सेहत की देखभाल कैसे कर सकता हूँ?

मैं अपने परिवार को सुखी कैसे बना सकता हूँ?

अपनी नौकरी को बरकरार रखने के लिए, मैं क्या कर सकता हूँ?

क्या आपने कभी खुद से ऐसे सवाल पूछे हैं? अगर हाँ, तो क्या इनके जवाब में आपको ऐसी व्यावहारिक सलाह मिली है जिसे लागू करके आपको वाकई फायदा पहुँचा हो? हर साल, पूरी दुनिया में लगभग 2,000 ऐसी किताबें छापी जाती हैं जिनमें इस तरह के कई अहम विषयों पर सुझाव दिए जाते हैं। सिर्फ ब्रिटेन में ही, हर साल लोग करीब 6.6 अरब रुपए ऐसी किताबों पर खर्च करते हैं, जिनमें ज़िंदगी की समस्याओं का सामना करने के ढेरों सुझाव दिए जाते हैं। अमरीका में, हर साल ऐसी किताबों की बिक्री से तकरीबन 26.4 अरब रुपए की कमाई होती है, जो लोगों को अपनी समस्याएँ खुद सुलझाने में मदद देने का दावा करती हैं। ये आँकड़े साफ दिखाते हैं कि रोज़मर्रा की समस्याओं से निपटने के लिए, अच्छी सलाह की तलाश में आप अकेले नहीं हैं, बल्कि आपके जैसे और भी बहुत-से लोग हैं।

इन ढेर सारी किताबों में जो सलाह पायी जाती है, उसके बारे में एक लेखक कहते हैं: "बहुत-सी नयी किताबों में वही पुरानी बातें दोहरायी जाती हैं।" दरअसल, इन किताबों में दिए ज़्यादातर सुझाव, उन बुद्धि-भरी सलाहों की एक झलक हैं जो दुनिया की सबसे पुरानी किताब में दर्ज़ हैं। यह पूरे संसार में सबसे ज़्यादा बाँटी जानेवाली किताब है। इस पूरी किताब का या इसके कुछ हिस्सों का अनुवाद लगभग 2,400 भाषाओं में किया जा चुका है। अब तक इसकी 4.6 अरब से भी ज़्यादा कॉपियाँ छापी जा चुकी हैं। यह किताब है, बाइबल।

बाइबल साफ-साफ कहती है: "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।" (2 तीमुथियुस 3:16) यह सच है कि बाइबल, उन किताबों जैसी नहीं है जो अपनी समस्याओं को खुद सुलझाने में मदद देने का दावा करती हैं। इसके बजाय, इसका खास मकसद यह ज़ाहिर करना है कि इंसानों के लिए परमेश्वर की मरज़ी क्या है। मगर फिर भी, बाइबल इस बारे में काफी कुछ बताती है कि इंसान के जीवन में आनेवाली आम परेशानियों से कैसे निपटा जाए। साथ ही, यह वादा करती है कि जो कोई इसकी हिदायतों को मानेगा, उसे फायदा होगा। (यशायाह 48:17, 18) जी हाँ, एक इंसान चाहे किसी भी जाति या संस्कृति का हो, कम पढ़ा-लिखा हो या ज़्यादा, अगर वह बाइबल में दी व्यावहारिक सलाहों को अपने जीवन में अमल करे, तो वह ज़रूर कामयाब होगा। तो फिर, क्यों न आप अगला लेख पढ़कर देखें और खुद तय करें कि सेहत, परिवार और नौकरी-पेशे जैसे विषयों के बारे में बाइबल जो सलाह देती है, वह सचमुच में व्यावहारिक है या नहीं?

व्यावहारिक सलाहें!

आजकल ऐसी किताबों का अंबार लगा हुआ है, जो लोगों को अपनी समस्याएँ खुद सुलझाने में मदद देने का दावा करती हैं। मगर इनमें दी ज़्यादातर सलाहें, सिर्फ ऐसे लोगों के लिए होती हैं जो मुसीबत में फँसे होते हैं। लेकिन बाइबल इन सभी किताबों से एकदम अलग है। इसकी सलाहों से न सिर्फ समस्याओं से घिरे लोगों को फायदा होता है, बल्कि दूसरों को भी मदद मिलती है। यह एक इंसान को ऐसी गलती करने से *दूर* रहने में मदद देती है, जिससे उसकी ज़िंदगी बेवजह की परेशानियों में उलझ सकती है।

बाइबल "भोलों को चतुराई, और जवान को ज्ञान और विवेक" दे सकती है। (नीतिवचन 1:4) अगर आप बाइबल में दी सलाह पर अमल करें, तो 'विवेक आपको सुरक्षित रखेगा और समझ आपकी रक्षक होगी, ताकि आपको बुराई के मार्ग से बचाए।' (नीतिवचन 2:11, 12) अब आइए ऐसी कुछ खास मिसालों पर गौर करें और यह देखें कि बाइबल की सलाहों को मानने से आप कैसे अपनी सेहत की देखभाल कर सकते हैं, अपने परिवार को सुखी बना सकते हैं और एक अच्छे कर्मचारी या मालिक बन सकते हैं।

हद-से-ज़्यादा शराब पीने से दूर रहिए

बाइबल, सही मात्रा में शराब पीने को गलत नहीं बताती। प्रेरित पौलुस ने जब जवान तीमुथियुस को थोड़ा दाखमधु लेने की सलाह दी, तो उसने बताया था कि यह दवा के तौर पर काम करती है। उसने कहा: "अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर।" (1 तीमुथियुस 5:23) बाइबल की दूसरी आयतें दिखाती हैं कि परमेश्वर ने दाखमधु का इंतज़ाम सिर्फ इसलिए नहीं किया कि यह बस दवा के तौर पर लिया जाए। इसके बजाय, बाइबल कहती है कि इससे "मनुष्य का मन आनन्दित" होता है। (भजन 104:15) फिर भी, यह "पियक्कड़" बनने से खबरदार करती है। (तीतुस 2:3) यह कहती है: "दाखमधु के पीनेवालों में न होना, न मांस के अधिक खानेवालों की संगति करना; क्योंकि पियक्कड़ और खाऊ अपना भाग खोते हैं।" (नीतिवचन 23:20, 21) जब इस तरह की अच्छी सलाह को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, तो इसका क्या अंजाम होता है? यह जानने के लिए, आइए कुछ देशों से मिली रिपोर्ट पर एक नज़र डालें।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट, *ग्लोबल स्टेटस रिपोर्ट ऑन एलकहॉल 2004* कहती है: 'आयरलैंड के रहनेवालों को शराब से होनेवाली समस्याओं को हल करने में, हर साल लगभग 132 अरब रुपए खर्च करने पड़ते हैं।' रिपोर्ट आगे कहती है कि इतने भारी खर्चे में यह सब भी शामिल है: 'इलाज का खर्चा (करीब 15.4 अरब रुपए), सड़क दुर्घटनाओं से हुआ नुकसान (करीब 16.7 अरब रुपए), शराब के नशे में किए अपराधों से हुआ नुकसान (करीब 5.5 अरब रुपए) और शराब की वजह से काम पर न

क्या आपको लगता है कि शराब पीने के बारे में बाइबल जो सलाह देती है, वह फायदेमंद है?

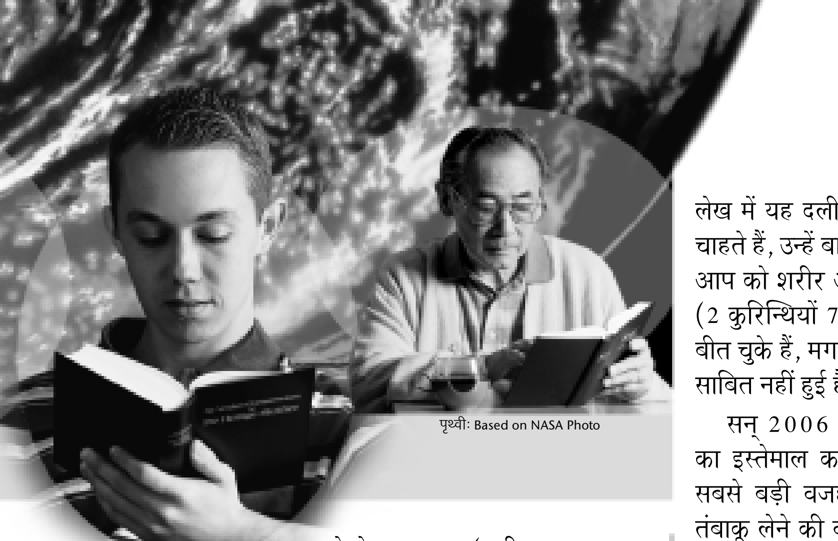

पृथ्वी: Based on NASA Photo

आने से हुआ घाटा (करीब 57.2 अरब रुपए)।'

लेकिन हद-से-ज़्यादा शराब पीने की वजह से न सिर्फ आर्थिक नुकसान होता है, बल्कि उससे भी बढ़कर इंसानों को बहुत-सी तकलीफें झेलनी पड़ती हैं। वह कैसे? मिसाल के लिए, ऑस्ट्रेलिया में 1 साल के अंदर करीब 50 करोड़ से भी ज़्यादा लोगों ने पियक्कड़ों के हाथों मार खायी थी। फ्रांस में जितने भी घरों में लड़ाई-झगड़े होते हैं, उनमें से 30 प्रतिशत घरों में ऐसा, शराब के गलत इस्तेमाल की वजह से होता है। इन सारी बातों के चलते, क्या आपको नहीं लगता कि शराब के बारे में बाइबल की सलाह एकदम सही है?

ऐसी आदतों से बचिए जो शरीर को दूषित करती हैं

सन् 1942 में जब सिगरेट पीना एक चलन था, तब इस पत्रिका ने अपने पाठकों को यह समझने में मदद दी कि तंबाकू का इस्तेमाल करना, बाइबल के सिद्धांतों के खिलाफ है। इसलिए हमें ऐसी चीज़ों से दूर रहना चाहिए। उसी साल छपे एक लेख में यह दलील दी गयी कि जो परमेश्वर को खुश करना चाहते हैं, उन्हें बाइबल की इस आज्ञा को मानना होगा: "अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें।" (2 कुरिन्थियों 7:1) आज उस लेख को छपे करीब 65 साल बीत चुके हैं, मगर क्या उसमें दी बाइबल की सलाह बुद्धि-भरी साबित नहीं हुई है?

क्या आप तंबाकू से दूर रहने की बाइबल की सलाह से सहमत हैं?

सन् 2006 में, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा कि तंबाकू का इस्तेमाल करना, "दुनिया में होनेवाली मौत की दूसरी सबसे बड़ी वजह है।" हर साल लगभग 50 लाख लोग तंबाकू लेने की वजह से मौत के मुँह में चले जाते हैं। जबकि एच.आई.वी./एड्स से सालाना करीब 30 लाख लोग मरते हैं। बीसवीं सदी के दौरान, अनुमान लगाया गया कि धूम्रपान की वजह से 10 करोड़ लोगों की मौत हुई है। यह संख्या उसी सदी में सभी युद्धों में मारे गए लोगों के बराबर है। इसलिए आज दुनिया में ज़्यादातर लोग तंबाकू से दूर रहने की सलाह को मानते हैं।

"व्यभिचार से भागो"

लैंगिक मामलों के बारे में बाइबल जो कहती है, उसे बहुत-से लोग फौरन कबूल नहीं करते। कई लोगों को यह सिखाया गया है कि हर तरह की लैंगिक इच्छाएँ गलत हैं। मगर बाइबल हर तरह की लैंगिक इच्छाओं को गलत नहीं बताती। फिर भी, यह इस बारे में बेहतरीन सलाह ज़रूर देती है कि एक इंसान को अपने मन में उठनेवाली लैंगिक इच्छाओं के बारे में क्या करना चाहिए। बाइबल सिखाती है कि लैंगिक संबंध सिर्फ पति-पत्नी के बीच होना चाहिए। (उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:4-6; इब्रानियों 13:4) इस संबंध के ज़रिए, वे एक-दूसरे के लिए अपना प्यार और कोमल स्नेह दिखा पाते हैं। (1 कुरिन्थियों 7:1-5) और जब उनकी कोई संतान होती है, तो उसे ऐसे माँ-बाप का लाड़-प्यार मिलता है जो एक-दूसरे की बहुत परवाह करते हैं।—कुलुस्सियों 3:18-21.

लैंगिक अनैतिकता के बारे में बाइबल आज्ञा देती है: "व्यभिचार से भागो।" (1 कुरिन्थियों 6:18, *NHT*) बाइबल यह आज्ञा क्यों देती है? इसकी एक वजह बताते हुए वही आयत आगे कहती है: "अन्य सारे पाप जो मनुष्य करता है देह के बाहर होते हैं, परन्तु व्यभिचारी तो अपनी देह के विरुद्ध पाप करता है।" जब लैंगिक मामलों के बारे में दी बाइबल की सलाह को ताक पर रख दिया जाता है, तो इसके क्या अंजाम होते हैं?

गौर कीजिए कि अमरीका में क्या हो रहा है, जो दुनिया